डिजिटल लाइब्रेरी ने बढ़ाया है दायरा

प्रतिभा कटियार



जब पुस्तकालय की बात होती है, आसपास एक ख़ुशबू-सी तैर जाती है। एक ऐसी ख़ुशबू जिसमें नई दुनिया का रास्ता खुलता नज़र आता है। किताबों की उस ख़ुशबू का हाथ थामकर दुनिया के किसी भी कोने की सैर पर निकला जा सकता है। इसमें जो आत्मीयता है उसपर न जाने कितनी कविताएँ लिखी गईं, फ़िल्मों के दृश्य फ़िल्माए गए। किताबों से हर किसी का अलग-सा रिश्ता है। किताबों का तोहफ़े में मिलना, घर में उन्हें सजाना, तकिए के नीचे रखकर सो जाना, सफ़र में साथ रहना और न जाने क्या-क्या!

लेकिन जब तकनीक ने दस्तक दी, लगा किताबों की इस ख़ुशबू का, इस पढ़ने वाले मिज़ाज का क्या होगा! क्या पुस्तकालयों की ज़रूरत कम हो जाएगी? किंडल आया, किताबों के ई-संस्करण, ऑडियो बुक्स आईं, और लगा कि अब गुम जाएगी किताबों की वो महक।

लेकिन ऐसा हुआ नहीं। न किताबों का जादू कम हुआ, न पुस्तकालयों की ज़रूरत। हाँ, तकनीक ने पुस्तकालयों का विस्तार ज़रूर किया है। ऑनलाइन / बाल साहित्य की मौजूदगी ने बहुत सारे काम आसान किए हैं। किताबों की बाबत मैंने तकनीक का उपयोग काफ़ी हद तक किया है। ऑनलाइन पता किया कि अमुक किताब किस लाइब्रेरी में उपलब्ध है, और उस लाइब्रेरी का रुख़ किया। बहुत सारी महत्त्वपूर्ण किताबें, सामग्री, जिनके पन्ने पीले पड़ चुके थे, के ई-वर्ज़न तैयार हुए।



कितबों के क़सीदे में लिखीं तमाम कविताओं से प्यार बरकरार रखते हुए भी मैंने पाया कि ई-लाइब्रेरी की अहमियत काफ़ी है। कितनी ही बार सफ़र में कितनी ही ई-बुक्स को मैंने सुना है।



तकनीक की इस अहमियत को शिक्षा के सन्दर्भ में भी देखा-समझा गया, और उसे स्कूली शिक्षा में भी शामिल किया गया। एनसीईआरटी ने पाठों को रुचिकर ढंग से पढ़ाने को लेकर ऑडियो-वीडियो तैयार किए, और उनके लिंक पाठों के साथ बारकोड के रूप में दिए हैं। शिक्षक प्रशिक्षण में भी ऑनलाइन उपलब्ध लेख, किताबें, किताबों के सन्दर्भ, आदि का उपयोग काफ़ी हो रहा है।

शिक्षक साथियों के लिए अब रीडिंग कॉर्नर की पहुँच बढ़ गई है। कई स्कूलों में शिक्षक पाठ पढ़ाने से पहले उससे सम्बन्धित कोई कहानी, कविता, आदि यूट्यूब पर ढूँढ़कर बच्चों से साझा करते हैं। ये ऑडियो-वीडियो किसी भी रूप में होते हैं, और बच्चे इनमें काफ़ी रुचि लेते हैं।

देहरादून के धोरण स्कूल की शिक्षिका अंजली का फ़ोन बच्चों का लर्निंग सेंटर बना रहता है। बच्चे ख़ुद कहानियाँ, कविताएँ ढूँढ़कर सुनते हैं, और रोल प्ले करते हैं। वे कई बार नई कहानी ढूँढ़कर मैडम को सुनाते हैं। फ़ोन का उपयोग कई तरह से होता है। मैडम एक समूह की ओर इशारा करते हुए कहती हैं, "वो रहा हमारा रीडिंग कॉर्नर।" वे सीखने की दक्षता के आधार पर बने आठ से दस बच्चों के समूह में उनके स्तर की कोई वीडियो कहानी लगा देती हैं, जिसे बच्चे देखते हैं। बच्चे ख़ुद कहानी को बीच में रोकना, उसपर बातें करना, फिर आगे बढ़ाना, आदि काम करते हैं। इसके लिए शिक्षिका ने बच्चों को तैयार किया है, और स्वयं तय करने की आज़ादी भी दी है। इसके अलावा, शिक्षिका ने स्कूल में स्पीकर भी रखा है। इसका उपयोग वे बच्चों को ऑडियो कहानियाँ सुनाने के लिए करती हैं। ऑडियो या वीडियो माध्यम से सुनी हुईं इन कहानियों पर चर्चा करने में शिक्षिका सभी बच्चों को शामिल करती हैं। वे इस चर्चा को लिखने-पढ़ने से भी जोड़ती हैं।

अजबपुर स्कूल की शिक्षिका कुसुमलता के स्कूल में बड़े स्क्रीन का टीवी इसीलिए लगाया गया, ताकि बच्चे बड़े स्क्रीन पर कहानियों को देख सकें और उनका आनन्द ले सकें। वे बताती हैं, "*पंचतंत्र* की कहानियों से लेकर *बरखा* सीरीज़ की किताबें सब ऑनलाइन मिल जाती हैं। बच्चे काफ़ी आनन्द भी लेते हैं।" मैंने उनसे पूछा, "लेकिन किताबें तो पढ़ना-लिखना सिखाने का काम करती हैं, ऐसे में ऑडियो-विज़ुअल मीडिया काम कैसे करता है?" उन्होंने कहा, "जो किताबें ऑनलाइन मौजूद हैं उन्हें हम स्क्रीन पर लगाते हैं। बड़े रंगीन चित्र और वाक्य देखकर बच्चे ख़ुद ही मन से पढ़ने की कोशिश करते हैं।"

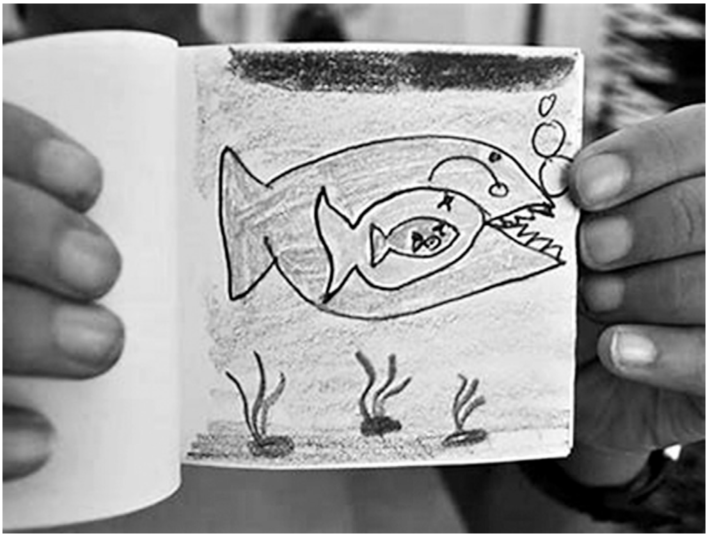
स्क्रीन पर चमकते बड़े-बड़े रंगीन चित्र और छोटे-छोटे शब्दों वाले वाक्यों को बच्चे धीरे-धीरे पढ़ते हैं। जो बच्चे पढ़ना नहीं जानते, वे पढ़े जा रहे शब्दों को ध्यान से देखते हैं। मैडम उन शब्दों को ज़ूम करके बड़ा कर देती हैं। अगर कोई बच्चा ग़लत पढ़ता है, दूसरे बच्चे उसे ठीक करते हैं। इस तरह मिलजुलकर पढ़ने की प्रक्रिया होती है। यहाँ की प्रक्रिया को देखकर मुझे लगा कि इससे उनकी दिलचस्पी व आत्मविश्वास बढ़ता होगा, और वे किताबों को भी पढ़ते होंगे।

शिक्षिका ने बताया, "बच्चों ने और मैंने साथ मिलकर *मालगुड़ी डेज़* देखा और उसपर बातचीत की। इन कहानियों को देखकर उन्हें कैसा लगा, इसको वो लिखते भी हैं। कई बार मैं आधी कहानी चलाकर रोक देती हूँ, और बच्चों से इसे पूरा करने के लिए कहती हूँ। बच्चे इस काम को बड़े मज़े से करते हैं। इस सबसे मेरा काम काफ़ी आसान हो गया है, और मुझे भी पढ़ाने में ज़्यादा मज़ा आने लगा है।"

क्या इंटरनेट का उपयोग बच्चों को बिगाड़ सकता है? इस सवाल पर शिक्षिका रजनी रावत कहती हैं, "सवाल इंटरनेट का नहीं, उस मार्गदर्शन का है जो बच्चों को प्रेरित व गाइड करता है कि वे किस तरह की सामग्री देखें और उसे कैसे चुनें। साथ ही, यह सोचना भी ज़रूरी है कि कितना देखें। एक बार बच्चों को कहानियाँ सुनने का चस्का लग जाए, वो वही ढूँढ़ते हैं। हाँ, थोड़ा ध्यान रखना ही होता है, और पढ़ने का चस्का हम बड़ों को भी लगना ज़रूरी है। फिर मीडियम बदलने से ज़्यादा फ़र्क़ नहीं पड़ता। मैंने न जाने कितनी कहानियाँ इंटरनेट के कारण ही पढ़ीं, और कविताओं के अब इतने पोस्टर-वीडियो बनने लगे हैं कि लगता है हर दिन कुछ नया सीखने, जानने को मिल रहा है। ई-लाइब्रेरी का उपयोग शिक्षकों व बच्चों के लिए काफ़ी मददगार हो रहा है।"

इंटरनेट पर किताबों की उपलब्धता और ज़रूरी सन्दर्भ से जुड़ी सामग्री ढूँढ़ना अब बेहद आसान हो गया है, जबकि पहले इसमें काफ़ी समय ज़ाया होता था।

बच्चों, शिक्षकों और आम पाठकों के लिए विभिन्न तरह की सामग्री ऑनलाइन उपलब्ध है। पाठक जानते ही होंगे कि एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों के साथ ही कई दूसरे राज्यों की पाठ्यपुस्तकें भी ऑनलाइन उपलब्ध हैं। एनसीईआरटी की वेबसाइट पर शिक्षकों के लिए प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएँ, जर्नल व अन्य शिक्षण सामग्री एक क्लिक पर उपलब्ध है।



इसी तरह, एकलव्य फ़ाउण्डेशन की वेबसाइट पर बच्चों व शिक्षकों के लिए पठनीय सामग्री उपलब्ध है। इसमें बच्चों के लिए ऑडियो कहानियाँ, कविताएँ, फ़्लिप बुक्स, आदि हैं, और शिक्षकों के लिए पत्रिकाएँ, विज्ञान की अवधारणाओं पर सन्दर्शिकाएँ, कक्षा में की जाने वाली गतिविधियों पर किताबें व सन्दर्भ के लिए अन्य सामग्री उपलब्ध है।

विशेष रूप से शिक्षकों व सन्दर्भ व्यक्तियों के लिए विभिन्न शैक्षिक मुद्दों पर सन्दर्भ सामग्री, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर ‘अनुवाद सम्पदा’ शीर्षक से उपलब्ध है। इस वेबसाइट पर भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, आदि के साथ इन विषयों के शिक्षणशास्त्र, सीखने-सिखाने के तरीक़ों, स्कूल व समाज के सम्बन्ध, जेंडर, कला, आदि पर सामग्री मिल सकती है। वेबसाइट पर उपलब्ध सामग्री में इन मुद्दों पर सैद्धान्तिक लेखों के साथ-साथ व्यवहारिक लेख भी हैं।

पुस्तकालय की तरह ही इन सभी वेबसाइटों पर नए मुद्दों पर सामग्री जुड़ती रहती है।

एक आम पाठक के लिए *इंटरनेट आर्काइव, कविता कोश, गद्य कोश, रेख़्ता, हिंदी समय, नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ़ इंडिया* जैसे ऑनलाइन मंच उपलब्ध हैं। तमाम पुस्तकालयों ने अब ई-पुस्तकालय के रूप में ख़ुद को अपडेट करना शुरू कर दिया है। कई विश्वविद्यालयों ने अपनी ई-लाइब्रेरी के पोर्टल बनाए हैं, जिनतक आसानी से पहुँचा जा सकता है। ऑनलाइन

माध्यम से अब देश-दुनिया के किसी भी कोने तक बेहद आसानी से पहुँचा जा सकता है। हालाँकि, इंटरनेट पर मौजूद ज़्यादातर सामग्री मुफ़्त है, लेकिन इसमें एक ख़तरा भी है। कई बार इंटरनेट पर कुछ सामग्री बिना किसी प्रामाणिक स्रोत के ग़लत लेखक के नाम के साथ भी मिलती है। ऐसे में पाठकों की सजगता ज़रूरी है, ताकि वे प्रामाणिक स्रोत तक पहुँच सकें।



बच्चों और शिक्षकों के लिए कुछ ऑनलाइन मंचों और वेबसाइटों के लिंक :

शिक्षकों के लिए
https://anuvadasampada.azimpremjiuniversity.edu.in/
https://www.eklavya.in/books/eklavya-books-pdf
https://www.eklavya.in/magazine-activity

बच्चों के लिए
https://www.eklavya.in/books
https://www.eklavya.in/books/flip-books
https://www.eklavya.in/books/audio-books
https://www.eklavya.in/books/eklavya-books-pdf

बरखा सीरीज़ : https://ncert.nic.in/degsn/NCERTBarkhaseries/Start.html
Story weaver: https://www.youtube.com/c/StoryWeaverHindi

https://storyweaver.org.in/en/
Story: https://www.youtube.com/watch?v=-hplYd9AX1U

प्रतिभा कटियार ने राजनीति शास्त्र में स्नातकोत्तर किया है। शुरुआत पत्रकारिता से करते हुए *स्वतंत्र भारत, पायनियर, हिन्दुस्तान, जनसत्ता, एक्सप्रेस* जैसे हिन्दी के अख़बारों में काम किया है। इसके बाद अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ जुड़कर उन्होंने शिक्षण को अपना करियर बनाया। *वह चिड़िया क्या गाती होगी* पत्र संकलन और *ख़्वाब जो बरस रहा है* व *चयनित कविताएँ* कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। अंडमान यात्रा पर लिखा यात्रा संस्मरण और कविता*ओ अच्छी लड़कियों* कर्नाटक के रानी चेनम्मा विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल हैं। उनकी दो कहानियों पर लघु फ़िल्मों का निर्माण हुआ है। उनकी कविताओं का गुजराती, मराठी और अँग्रेज़ी में अनुवाद हुआ है।
सम्पर्क : pratibha.katiyar@azimpremjifoundation.org